दिनांक: 26 ज़िलहिज्जा 1447 हिजरी, मुताबिक़ 12 जून 2026 ईस्वी

{الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى}

अल्लाह कहाँ है?

सारी तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, हम उसी की तारीफ़ करते हैं, उसी से मदद मांगते हैं और उसी से माफ़ी तलब करते हैं। और हम अपने नफ़्स की बुराइयों और अपने बुरे अमलों से अल्लाह की पनाह में आते हैं। जिसे अल्लाह हिदायत दे उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं, और जिसे वह गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादय के लायक़ नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उसके बंदे और उसके रसूल हैं।

{يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ} [آل عمران: 102]

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरने का हक़ है, और तुम्हें मौत न आए मगर इस हाल में कि तुम मुसलमान हो।" (सूरह आले इमरानः 102)

ऐ मुसलमानो!

बेशक वे बातें जो ईमान को बढ़ाने और यक़ीन को मज़बूत करने का कारण बनती हैं, उनमें से एक अल्लाह तआला की बनाई हुई ब्रह्मांड की रचनाओं में सोच-विचार करना और उसकी शरीअत की आयतों (क़ुरआन मजीद) में में तदब्बुर करना और गहराई से सोचना है। क्योंकि रचनाओं की महानता और उनकी ख़ूबसूरत बनावट, उनके रचनाकार (ख़ालिक़) की महानता और उसकी बेहतरीन कारीगरी को दर्शाती है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

{إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِأُولِي الْأَلْبَابِ} [آل عمران: 190]

"यक़ीनन आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में, और रात और दिन के बारी-बारी से आने-जाने में अक़्ल वालों के लिए निशानियाँ हैं"। (सूरह आले इमरानः 190)

और महानतम मख़लूक़ात में से अल्लाह की "कुर्सी" है, जिसका गुण अल्लाह तआला ने अपने इस फ़रमान में बयान किया है:

{وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ} [البقرة: 255].

"उनकी कुर्सी ने आसमानों और ज़मीन को अपने घेरे में ले रखा है"। (सूरह अल-बक़रा: 255)

और कुर्सी अल्लाह तआला के दोनों क़दमों के रखने की जगह है। चुनांचे हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया:

الْكُرْسِيُّ مَوْضِعُ قَدَمَيْهِ، وَالْعَرْشُ لَا يُقْدَرُ قَدْرُهُ

"कुर्सी उस (अल्लाह) के दोनों क़दमों की जगह है, और अर्श की महानता का तो अंदाज़ा ही नहीं लगाया जा सकता"। (इस हदीस को इमाम हाकिम ने रिवायत किया है और इसे सही क़रार दिया है, और इमाम ज़हबी ने उनपर सहमति जताई है)।

इसी कुर्सी के नाम पर अल्लाह तआला की किताब (पवित्र क़ुरआन) की सबसे महान आयत का नाम "आयतुल कुर्सी" रखा गया है; हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

«يَا أَبَا الْمُنْذِرِ! أَتَدْرِي أَيُّ آيَةٍ مِنْ كِتَابِ اللَّهِ مَعَكَ أَعْظَمُ؟»

"ऐ अबू मुन्ज़िर! क्या तुम जानते हो कि अल्लाह की किताब की कौन सी आयत तुम्हारे पास सबसे महान है?"

उन्होंने कहा: मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह और उसके रसूल ही बेहतर जानते हैं। आप ﷺ ने (दुबारा) फ़रमाया: "ऐ अबू मुन्ज़िर! क्या तुम जानते हो कि अल्लाह की किताब की कौन सी आयत सबसे महान है?" उन्होंने कहा: मैंने अर्ज़ किया:

{اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ}

(अल्लाह, उसके सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं, वह हमेशा ज़िंदा रहने वाला और सबको संभालने वाला है)। (यह सुनकर) आप ﷺ ने मेरे सीने पर हाथ मारा और फ़रमाया:

«وَاللَّهِ! لِيَهْنِكَ العِلْمُ أَبَا المُنْذِرِ» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ].
"अल्लाह की क़सम! ऐ अबू मुन्ज़िर! तुम्हें यह इल्म मुबारक हो"। (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

ऐ अल्लाह के बंदो!

अगर अल्लाह की कुर्सी इस क़दर महान मर्तबे पर है कि उसने सातों आसमानों और ज़मीनों को घेर रखा है, तो जान लो कि रहमान का 'अर्श' (सिंहासन) जिस पर हमारा रब इस तरह मुस्तवी (विराजमान) है जो उसकी महानता और शान के लाय़क़ है, इस कुर्सी से भी बड़ा और ज़्यादा महान है। अल्लाह तआला ने कहा:

{الرَّحْمَٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَىٰ} [طه: 5].
"रहमान अर्श पर मुस्तवी हुआ"। (सूरह ताहा: 5) और अल्लाह तआला ने कहा:

{وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ} (هود: 7)
"और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छह दिनों में पैदा किया और उसका अर्श पानी पर था"। (सूरह हूद: 7)

अल्लाह तआला ने अपनी किताब में कई जगहों पर अपने अर्श का ज़िक्र किया है, चुनांचे उसका एक महान गुण "अज़मत" (महानता) बयान करते हुए कहा:

{اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ} [التوبة: 129]
"अल्लाह ही है जिसके सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं, उसी पर मैंने भरोसा किया और वही अर्श-ए-अज़ीम (महान अर्श) का रब है"। (सूरह अत्-तौबा: 129)

उसकी दूसरी सिफ़त बयान की कि वह 'करीम' (प्रतिष्ठित) है; जो सबसे ऊंची और गरिमामयी सिफ़तों को समेटे हुए है; चुनांचे फ़रमाया:

{فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ} [المؤمنون: 116]
"तो बहुत बुलंद है अल्लाह, जो सच्चा बादशाह है, उसके सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं, वह अर्श-ए-करीम का रब है"। (सूरह अल्-मोमिनून: 116)

और रसूल ﷺ ने अर्श की महानता बताई है और ख़बर दी है कि उसका साइज बहुत बड़ा है। हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी ﷺ ने कहा:

«يَا أَبَا ذَرٍّ، مَا السَّمَاوَاتُ السَّبْعُ مَعَ الْكُرْسِيِّ إِلَّا كَحَلْقَةٍ مُلْقَاةٍ بِأَرْضِ فَلَاةٍ، وَفَضْلُ الْعَرْشِ عَلَى الْكُرْسِيِّ كَفَضْلِ الْفَلَاةِ عَلَى الْحَلْقَةِ» [رَوَاهُ ابْنُ حِبَّانَ فِي صَحِيحِهِ]

"ऐ अबू ज़र! सातों आसमान कुर्सी के मुक़ाबले में ऐसे ही हैं जैसे एक विशाल मैदान (रेगिस्तान) में एक छोटा सा छल्ला (अंगूठी) फेंक दिया जाए, और अर्श की फ़ज़ीलत कुर्सी पर वैसी ही है जैसे उस विशाल मैदान की फ़ज़ीलत उस छल्ले पर है"। (इस हदीस को इमाम इब्ने हिब्बान ने अपनी सहीह में रिवायत किया है)।

अर्श तमाम मख़लूक़ात (सृष्टि) की छत है; जैसा कि हज़रत अबू हुरायरा रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया:

«فَإِذَا سَأَلْتُمُ اللَّهَ فَسَلُوهُ الْفِرْدَوْسَ، فَإِنَّهُ أَوْسَطُ الْجَنَّةِ، وَأَعْلَى الْجَنَّةِ، وَفَوْقَهُ عَرْشُ الرَّحْمَنِ، وَمِنْهُ تَفَجَّرُ أَنْهَارُ الْجَنَّةِ» [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ]

"जब तुम अल्लाह से मांगो तो उससे जन्नतुल फ़िरदौस मांगो, क्योंकि वह जन्नत का सबसे अच्छा और सबसे ऊंचा हिस्सा है, और उसके ऊपर रहमान का अर्श है, और उसी से जन्नत की नहरें फूटती हैं"। (इस हदीस को इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह ने रिवायत किया है।)।

उसी प्रकार अर्श सारी मख़लूक़ात में सबसे वज़नी है, चुनांचे हदीस में आया है:

«سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ، عَدَدَ خَلْقِهِ، وَرِضَا نَفْسِهِ، وَزِنَةَ عَرْشِهِ، وَمِدَادَ كَلِمَاتِهِ»

"हम अल्लाह की हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी पाकीज़गी बयान करते हैं; उसकी मख़लूक़ की तादाद के बराबर, उसके नफ़्स की रज़ा के मुताबिक़, उसके अर्श के वज़न के बराबर और उसके कलिमात (शब्दों) की स्याही के बराबर।" (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है)।

शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिया रहमतुल्लाह अलैह ने कहा:

فَهَذَا يُبَيِّنُ أَنَّ زِنَةَ الْعَرْشِ أَثْقَلُ الْأَوْزَانِ

"यह इस बात को साफ़ करता है कि अर्श का वज़न तमाम वज़नों से ज़्यादा भारी है"।

ऐ अल्लाह के बंदो!

अल्लाह तआला ने अर्श के पाये (खंभे) बनाए हैं जिन पर वह क़ायम है, हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, उन्होंने कहा: नबी ﷺ ने फ़रमाया:

«لَا تُخَيِّرُوا بَيْنَ الأَنْبِيَاءِ، فَإِنَّ النَّاسَ يَصْعَقُونَ يَوْمَ القِيَامَةِ، فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ تَنْشَقُّ عَنْهُ الأَرْضُ، فَإِذَا أَنَا بِمُوسَى آخِذٌ بِقَائِمَةٍ مِنْ قَوَائِمِ العَرْشِ، فَلَا أَدْرِي أَكَانَ فِيمَنْ صَعِقَ، أَمْ حُوسِبَ بِصَعْقَةِ الأُولَى» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ]

"नबियों के बीच एक-दूसरे को (इस अंदाज़ में) फ़ज़ीलत न दो (जिससे दूसरों की शान कम हो), लोग क़ियामत के दिन बेहोश हो जाएंगे। अपनी क़ब्र से सबसे पहले निकलने वाला मैं ही हूँगा (यानी मुझे सबसे पहले होश आएगा)। लेकिन मैं देखूँगा कि मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के अर्श का पाया पकड़े हुए खड़े हैं। अब मुझे मालूम नहीं कि मूसा अलैहिस्सलाम भी बेहोश हुए थे और मुझसे पहले होश में आ गए, या उन्हें पहली बेहोशी जो (तूर पहाड़ पर) हो चुकी है, वही काफ़ी समझी गई।" (सही बुख़ारी, सही मुस्लिम)।

अल्लाह तआला ने इस अर्श को उठाने के लिए सम्मानित फ़रिश्तों को नियुक्त फ़रमाया है; अल्लाह तआला ने कहा:

{ وَيَحۡمِلُ عَرۡشَ رَبِّكَ فَوۡقَهُمۡ يَوۡمَئِذٖ ثَمَٰنِيَةٞ } [الحاقة: 17]

"और उस दिन आपके रब के अर्श को आठ (फ़रिश्ते) अपने ऊपर उठाए हुए होंगे।" [सूरह अल-हाक़्क़ा: 17]

यह वे फ़रिश्ते हैं जिनकी पैदाइश की बड़ाई और महानता को अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता, अल्लाह तआला ने कहा:

{ ٱلَّذِينَ يَحۡمِلُونَ ٱلۡعَرۡشَ وَمَنۡ حَوۡلَهُۥ يُسَبِّحُونَ بِحَمۡدِ رَبِّهِمۡ وَيُؤۡمِنُونَ بِهِۦ وَيَسۡتَغۡفِرُونَ لِلَّذِينَ ءَامَنُواْ } [غافر: 7]

"जो (फ़रिश्ते) अर्श को उठाए हुए हैं और जो उसके आस-पास हैं, वे अपने रब की हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी तस्बीह (पाकीज़गी) बयान करते हैं, उस पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों के लिए माफ़ी की दुआ करते हैं।" [सूरह अल्-ग़ाफ़िर: 7]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा की हदीस में है कि नबी ﷺ ने कहा:

«أُذِنَ لِي أَنْ أُحَدِّثَ عَنْ مَلَكٍ مِنْ مَلَائِكَةِ اللهِ مِنْ حَمَلَةِ الْعَرْشِ، إِنَّ مَا بَيْنَ شَحْمَةِ أُذُنِهِ إِلَى عَاتِقِهِ مَسِيرَةُ سَبْعِ مِائَةِ عَامٍ» [رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ، وَصَحَّحَهُ الأَلْبَانِيُّ]

"मुझे इजाज़त दी गई कि मैं अल्लाह के फ़रिश्तों में से अर्श उठाने वाले एक फ़रिश्ते के बारे में बताऊं, उसके कान की लौ से लेकर उसके कंधों के बीच सात सौ साल की दूरी है।" [इसे इमाम अबू दाऊद ने रिवायत किया और अल्लामा अल्बानी ने इसे सही क़रार दिया है]

ऐ मुसलमान भाइयो!

अल्लाह तआला ने अपने अर्श को कई विशेषताओं और महान गुणों से सम्मानित किया है, उनमें से एक वह प्रतिज्ञा और मीसाक़ है जिसे अल्लाह ने लिखा और पूर्ण सत्यता के साथ उसे अर्श के ऊपर रखा है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

«إِنَّ اللهَ كَتَبَ كِتَابًا قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَ الخَلْقَ: إِنَّ رَحْمَتِي سَبَقَتْ غَضَبِي، فَهُوَ مَكْتُوبٌ عِنْدَهُ فَوْقَ العَرْشِ» [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ]

"अल्लाह तआला ने सृष्टि को पैदा करने से पहले एक लिखावट लिखी कि: 'बेशक मेरी रहमत (दया) मेरे ग़ज़ब (क्रोध) पर भारी पड़ गई (आगे निकल गई)', चुनांचे वह उसके पास अर्श के ऊपर लिखी हुई मौजूद है।" [इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है]

अल्लाह तआला ने अर्श को जो विशेषताएं दे रखी हैं, उनमें से एक यह भी है कि उसने शहीदों की आत्माओं को यह सम्मान बख़्शा है कि वे जन्नत में सैर करती हैं और फिर उन दीपकों में आकर ठहरती हैं जो अर्श के साथ लटकी हुई हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने शहीदों की रूहों के बारे में फ़रमाया:

«أَرْوَاحُهُمْ فِي جَوْفِ طَيْرٍ خُضْرٍ، لَهَا قَنَادِيلُ مُعَلَّقَةٌ بِالْعَرْشِ، تَسْرَحُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ شَاءَتْ، ثُمَّ تَأْوِي إِلَى تِلْكَ الْقَنَادِيلِ» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ]

"उनकी रूहें हरे परिंदों के पेट में होती हैं, उनके लिए अर्श के साथ लटकी हुई कंदीलें हैं, वे जन्नत में जहाँ चाहती हैं चरती-चुगती और सैर करती हैं, फिर उन्हीं कंदीलों में वापस आकर आराम करती हैं।" [इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है]

पाक है अल्लाह अपनी प्रशंसा के साथ, जो बुलंद और महान बादशाह है, महानता और प्रतिष्ठा वाला, और बड़ाई व गौरव वाला है। अल्लाह तआला मेरे और आपके लिए पवित्र क़ुरआन में बरकत अता फ़रमाए, और मुझे और आपको उन आयतों और हिकमत भरी नसीहतों से फ़ायदा पहुँचाए जो इसमें हैं।

मैं अपनी यह बात कहता हूँ और अपने लिए और आप सबके लिए अल्लाह से हर गुनाह की माफ़ी मांगता हूँ और उसी के सामने तौबा करता हूँ, अतः आप सब भी उसी से माफ़ी मागें और उसी की तरफ़ रुजू करें; बेशक वह बहुत माफ़ करने वाला, अत्यंत दयावान है।

दूसरा ख़ुत्बा

सारी तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है, और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उसके बंदे और उसके रसूल हैं, अल्लाह तआला उन पर, उनके परिवार पर और उनके सारे सहाबा पर दरूद-ओ-सलाम नाज़िल फ़रमाए।

मैं आपको और अपने आप को अल्लाह तआला के तक़्वा की वसीयत करता हूँ, क्योंकि जो अल्लाह से डरता है, अल्लाह उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाता है, उसे गुनाहों और बुराइयों से बचाता है और उसे अपनी पनाह में लेता है; अल्लाह तआला ने कहा:

{يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَل لَّكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ}

[الأنفال:29]

"ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरते रहोगे तो अल्लाह तुम्हें फ़ैसले की शक्ति (हक़ और बातिल में फ़र्क़ करने वाला नूर) अता करेगा, तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर देगा और तुम्हें माफ़ कर देगा और अल्लाह बड़ा ही कृपा करने वाला है।" [सूरह अल-अन्फ़ाल: 29]

ऐ मुसलमानो!

बेशक वे बुनियादी बातें जिनकी अल्लाह तआला ने अपनी किताब में साफ़ तौर पर व्याख्या की है, जिनके बारे में नबी की हदीसें तवातुर के साथ (बड़ी संख्या में) आई हैं, और जिन पर अहले सुन्नत वल जमाअत का इज्मा (सहमति) है; उनमें से एक यह है कि अल्लाह तआला अर्श पर मुस्तवी है। यानी वह अर्श पर बुलंद और ऊंचा है, और उसका यह इस्तवा (अर्श पर बुलंद होना) उसकी पवित्र शान के लाय़क़ है, जो मख़लूक़ के स्थापित होने की तरह बिल्कुल नहीं है। जैसा कि अल्लाह तआला का फ़रमान है:

{ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ } [الشورى: 11]

"उस जैसी कोई चीज़ नहीं, और वही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है।" [सूरह अश्शूरा: 11]

अल्लाह तआला अपने अर्श पर बुलंद है और उसका अर्श आसमान में उसकी मख़लूक़ात के ऊपर है। इमाम औज़ाई रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया:

كُنَّا -وَالتَّابِعُونَ مُتَوَافِرُونَ- نَقُولُ: إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ فَوْقَ عَرْشِهِ، وَنُؤْمِنُ بِمَا وَرَدَتْ بِهِ السُّنَّةُ مِنْ صِفَاتِهِ

"हम यह कहा करते थे जबकि ताबेईन बड़ी संख्या में मौजूद थे कि: यक़ीनन अल्लाह तआला अपने अर्श के ऊपर है, और हम उन सारे सिफ़ात (गुणों) पर ईमान रखते हैं जो नबी ﷺ की सुन्नत में आए हैं।"

और यही इस उम्मत के सलफ़-ए-सालेहीन (पुण्य पूर्वजों) और इसके सबसे बेहतरीन लोगों का अक़ीदा (आस्था) है, और इसी रास्ते पर चारों इमाम (अबू हनीफ़ा, मालिक,

शाफई और अह़मद इब्न हंबल) चलते रहे हैं; इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया:

نُقِرُّ بِأَنَّ اللَّهَ تَعَالَى عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى مِنْ غَيْرِ أَنْ يَكُونَ لَهُ حَاجَةٌ

"हम इस बात का इक़रार करते हैं कि अल्लाह तआला अर्श पर मुस्तवी हुआ, बिना इसके कि वह उसका मोहताज़ हो।"

और इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह से पूछा गया:

كَيْفَ اسْتَوَى؟ فَقَالَ: اسْتِوَاؤُهُ مَعْقُولٌ، وَكَيْفِيَّتُهُ مَجْهُولَةٌ، وَسُؤَالُكَ عَنْ هَذَا بِدْعَةٌ

"अल्लाह कैसे मुस्तवी हुआ?" तो उन्होंने फ़रमाया: "अर्श पर स्थापित होना (शब्दकोश में) मालूम और समझ में आने वाला है, लेकिन उसका स्वरूप (कैफ़ियत) अज्ञात है, और तुम्हारा इस बारे में सवाल करना बिदअत (दीन में नई बात) है।"

और इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया:

الْقَوْلُ فِي السُّنَّةِ الَّتِي أَنَا عَلَيْهَا، وَرَأَيْتُ عَلَيْهَا الَّذِينَ رَأَيْتُهُمْ مِثْلَ سُفْيَانَ وَمَالِكٍ وَغَيْرِهِمَا: الْإِقْرَارُ بِشَهَادَةِ أَن لَّا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ، وَأَنَّ اللَّهَ عَلَى عَرْشِهِ فِي سَمَائِهِ

"उस अक़ीदे के बारे में बात जिस पर मैं क़ायम हूँ, और जिस पर मैंने उन लोगों को पाया जिन्हें मैंने देखा है — जैसे सुफ़ियान और मालिक आदि — यह है कि: इस बात की गवाही का इक़रार करना कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, और यह कि अल्लाह अपने आसमान में अपने अर्श पर है।"

और इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया:

وَقَدْ عَرَفَ أَهْلُ الْعِلْمِ أَنَّ فَوْقَ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ: الْكُرْسِيَّ وَالْعَرْشَ وَاللَّوْحَ الْمَحْفُوظَ

"और इल्म वाले (विद्वान) यह बात जानते हैं कि सातों आसमानों के ऊपर कुर्सी, अर्श और लौह-ए-महफ़ूज़ हैं।"

अतः वास्तविक सौभाग्यशाली वह है जिसने अल्लाह की किताब और सुन्नत को मज़बूती से थाम लिया, अल्लाह तआला की उन तमाम सिफ़ात पर सच्चे दिल से ईमान

लाया जो उसने ख़ुद अपने लिए बयान फ़रमाई हैं या जिनकी ख़बर उसके रसूल ﷺ ने दी है। और वह उसी रास्ते पर सख़्ती से क़ायम रहा जिस पर नबी ﷺ और उनके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम चल रहे थे, कि बिना किसी तहरीफ़ (बदलाव/हेर-फेर), तअतील (गुणों को नकारने), तकयीफ़ (स्वरूप या कैफ़ियत की खोज करने) और तम्सील (मख़लूक़/सृष्टि से तुलना करने) के इन अस्मा-ओ-सिफ़ात पर ईमान लाया जाए।

ऐ अल्लाह! तमाम मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को माफ़ कर दे; उनमें से जीवित लोगों को भी और मृत लोगों को भी। ऐ हमारे रब! हमसे मुश्किलों, महामारियों, तकलीफ़ों और तंगियों को दूर फ़रमा दे, हम पर अपनी नेमतों को हमेशा बनाए रख, हमसे अज़ाबों को दूर रख। हमारे नफ़्स को पाक कर दे, तू ही सबसे बेहतर पाक करने वाला है, ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भी भलाई अता फ़रमा, आख़िरत में भी भलाई अता फ़रमा और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा। ऐ अल्लाह! कुवैत और इसके रहने वालों की हर बुराई और नापसंद चीज़ से हिफ़ाज़त फ़रमा, इस देश को अमन और सुकून वाला बना और मुसलमानों के बाक़ी तमाम देशों को भी। ऐ अल्लाह! सरहदों पर पहरा देने वाले हमारे भाइयों, सिक्योरिटी फ़ोर्सेस, रक्षा संस्थानों, नेशनल गार्ड्स और देश की सुरक्षा में लगे तमाम लोगों की हिफ़ाज़त फ़रमा, और ज़मीन को उनके क़दमों के नीचे मज़बूत रख। ऐ अल्लाह! हमारे अमीर और उनके वली अहद (उत्तराधिकारी) को उन कामों की तौफ़ीक़ अता फ़रमा जो तुझे पसंद और प्रिय हैं, और नेकी व तक़्वा के कामों की तरफ़ उनकी रहनुमाई फ़रमा। हमारी आख़िरी पुकार यही है कि सारी तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है।

खुतबात-ए-जुमा तैयार करने वाली कमेटी